कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



विश्व अर्थव्यवस्था का उदय

- हम जानते हैं कि सामान्य रूप से सभी देश भोजन के मामले में आत्मनिर्भर होने का प्रयास करते रहते हैं।
- यद्यपि 19वीं सदी के ब्रिटेन की बात अलग ही थी।
- यदि उस समय ब्रिटेन खाद्य आत्मनिर्भरता के रास्ते पर चलता तो वहां के लोगों का जीवनस्तर गिर जाता और सामाजिक तनाव फैलता।

इस आशंका का कारण :-

- 18वीं सदी के आखिरी दशकों में ब्रिटेन की आबादी तेजी से बढ़ने लगी थी जिससे देश में भोजन की माँग भी बढ़ी।
- जैसे-जैसे शहर फैले और उद्योगों का विकास हुआ वैसे-वैसे ही कृषि उत्पादों की मांग भी बढ़ने लगी।
- कृषि उत्पाद मंहगे होने लगे।
- दूसरी तरफ बड़े भूस्वामियों के दबाव में सरकार ने मक्का के आयात पर भी पाबंदी लगा दी थी।
- मक्का पर पाबंदी लगाये जाने वाले इस कानून को 'कॉर्न लॉ' कहा जाता था।
- तब खाद्य पदार्थों की ऊंची कीमतों से परेशान उद्योगपतियों और शहरी बाशिंदों ने सरकार को कॉर्न लॉ को फौरन समाप्त करने को मजबूर कर दिया।
- कॉर्न लॉ के निरस्त हो जाने के बाद बहुत कम कीमत पर खाद्य पदार्थों का आयात किया जाने लगा।
- आयतित खाद्य पदार्थों की कीमत ब्रिटेन में पैदा होने वाले खाद्य पदार्थों से भी कम होती थी।
- फलस्वरूप ब्रिटिश किसानों की हालत बिगड़ने लगी। क्योंकि वे आयतित माल की कीमतों का मुकाबला नहीं कर सकते थे।
- विशाल भूभागों पर खेती बंद हो गई।
- हजारों लोग बेरोजगार हो गये।
- लोग गांवों से उजड़ कर शहरों में या दूसरे देशों में जाने लगे।
- जब खाद्य पदार्थों की कीमतों में गिरावट आई तो ब्रिटेन में उनका उपभोग बढ़ गया।
- 19वीं सदी के मध्य में ब्रिटेन में औद्योगिक रूप से काफी प्रगति हुई जिससे लोगों की आय में वृद्धि हुई। इससे लोगों की जरूरतें बढ़ीं।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- खाद्य पदार्थों का आयात भी और ज्यादा बढ़ गया।
- तब रूस, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, पूर्वी यूरोप तथा दुनिया के हर हिस्से में ब्रिटेन का पेट भरने के लिए जमीनों को साफ करके खेती की जाने लगी।
- खेती के लिए जमीन को साफ कर देना ही काफी नहीं था।
- खेती वाले इलाकों को बंदरगाहों से जोड़ने के लिए रेलवे की भी जरूरत थी।
- माल के ज्यादा आवागमन के लिए नई गोदियाँ बनाना तथा पुरानी गोदियों को फैलाना जरूरी था।
- नई जमीनों पर खेती करने के लिए दूसरे इलाकों से लोगों का आकर घर बनाना तथा फिर नई बस्तियाँ बनना भी जरूरी था।
- इन सारे कार्यों के लिए पूंजी और श्रम की जरूरत थी।
- इसके लिए लंदन जैसे वित्तीय केन्द्रों से पूंजी आने लगी।
- अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे जिन स्थानों पर मजदूरों की कमी थी वहां लोगों को ले जाकर बसाया जाने लगा यानी श्रम का प्रवाह होने लगा।
- 19वीं सदी में यूरोप के लगभग 5 करोड़ लोग अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में जाकर बस गये।
- माना जाता है कि लगभग 15 करोड़ लोग बेहतर भविष्य की चाह में अपने घर-बार छोड़कर दूर-दूर के देशों में जाकर काम करने लगे थे।

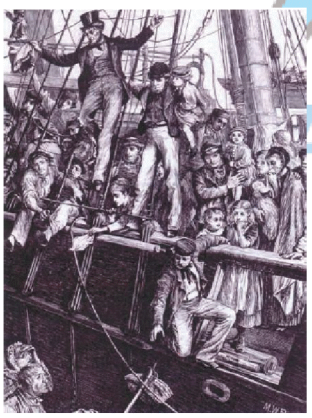

अमेरिका को रवाना होते आप्रवासियों से लदे जहाज का चित्र
एम. डब्ल्यू. रिडले-1869



जहाज पर चढ़ने का इंतजार करते आयरिश आप्रवासियों का चित्र
माइकेल फिट्जजेराल्ड-1874

वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था :-

- 1890 तक एक वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था सामने आ चुकी थी।
- अब श्रम, पूंजी, पारिस्थितिकी और तकनीक में काफी बदलाव आ चुके थे।
- अब भोजन किसी आसपास के गांव या कस्बे से नहीं बल्कि हजारों मील दूर से आने लगा था।
- अब अपने खेतों पर खुद काम करने वाले किसान ही खाद्य पदार्थ पैदा नहीं कर रहे थे।
- यह काम अब औद्योगिक मजदूर करने लगे थे जो संभवत: हाल ही में वहां आये थे तथा वे उन खेतों में काम कर रहे थे जहां एक पीढ़ी पहले ही ठेठ जंगल खड़े थे।
- खाद्य पदार्थों को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने के लिए रेलवे का इस्तेमाल किया जाता था।
- रेल का नेटवर्क इसी काम के लिए बिछाया गया था।
- फिर एक देश से दूसरे देश में पहुंचाने के लिए पानी के जहाजों का प्रयोग किया जाता था।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- इन जहाजों पर दक्षिण यूरोप, एशिया, अफ्रीका और कैरीबियन द्वीप समूह के मजदूरों से बहुत कम वेतन पर काम करवाया जाता था।
- बहुत छोटे स्तर पर ही सही यह प्रयोग पंजाब में भी करके बदलाव लाने की कोशिश की गई।
- यहां ब्रिटिश भारतीय सरकार ने अर्द्ध-रेगिस्तानी परती जमीनों को उपजाऊ बनाने के लिए नहरों का जाल बिछा दिया था।
- इसका मुख्य उद्देश्य निर्यात के लिए गेहूं और कपास की खेती करना था।
- नई नहरों के इन इलाकों में पंजाब के अन्य स्थानों के लोगों को यहां लाकर बसाया गया।
- उनकी बस्तियों को केनाल कॉलोनी (नहर-बस्ती) कहा जाता था।
- भोजन तो सिर्फ एक उदाहरण मात्र है। कुछ ऐसी ही कहानी कपास की भी रही है।
- कपास की भी दुनिया भर में बड़े पैमाने पर खेती की जाने लगी थी ताकि ब्रिटिश कपड़ा मिलों की मांग को पूरा किया जा सके।
- रबर की कहानी भी इससे अलग नहीं है।
- भिन्न-भिन्न इलाकों में भिन्न भिन्न चीजों के उत्पादन में इतनी महारत हासिल कर ली थी कि 1820-1914 के बीच विश्व व्यापार में 25 से 40 गुना वृद्धि हो चुकी थी।
- इस व्यापार में लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा 'प्राथमिक उत्पादों' यानि गेहूं और कपास जैसे कृषि उत्पादों तथा कोयले जैसे खनिज पदार्थों का था।

तकनीक की भूमिका :-

- 19वीं सदी में आये परिवर्तनों की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी यदि रेलवे, पानी के जहाज, टेलिग्राफ जैसे तकनीकी प्रगति नहीं हुई होती।
- तकनीकी प्रगति चारों ओर हो रहे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कारणों से ही होती है।
- उदाहरण के लिए - औपनिवेशीकरण के कारण ही यातायात और परिवहन के साधनों में भारी सुधार किये गये।
- तेज चलने वाली रेलगाड़ियां बनीं, जलपोतों का आकार बढ़ाया गया।

जिससे कृषि उत्पादों को खेतों से दूर-दूर के बाजारों में कम लागत पर व आसानी से पहुंचाया जा सके।

- मांस उत्पादों के व्यापार से इस प्रक्रिया को हम ठीक ढंग से जान सकते हैं।
- 1870 के दशक तक अमेरिका से यूरोप को मांस का निर्यात नहीं किया जाता था।
- उस समय तक केवल जिन्दा जानवर ही भेजे जाते थे जिन्हें यूरोप ले जाकर काटा जाता था।
- लेकिन जिंदा जानवर बहुत ज्यादा जगह घेरते थे।
- बहुत सारे तो लंबे सफर में मर जाते थे या बीमार पड़ जाते थे। बहुतों का वजन गिर जाता था या वे खाने लायक नहीं रह पाते थे।
- इसलिए मांस खाना एक मंहगा सौदा था और यूरोप के गरीबों की पहुंच से बाहर था।
- दूसरी तरफ ऊंची कीमतों के कारण मांस की मांग तथा उत्पादन दोनों ही कम रहते थे।
- नई तकनीक आने पर स्थिति बदल गई।
- पानी के जहाजों में रेफ्रिजरेटर लगा दिये गये जिससे जल्दी खराब होने वाली चीजें भी लंबी यात्राओं

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

पर ले जायी जा सकती थी।

- इसके बाद तो जानवरों की यात्रा से पहले ही मारा जाने लगा।
- अमेरिका या न्यूजीलैंड सब जगह से जानवरों की बजाय उनका मांस ही यूरोप भेजा जाने लगा।
- इससे न केवल समुद्री यात्रा में आने वाला खर्चा कम हो गया बल्कि यूरोप में मांस के दाम भी गिर गये।
- यूरोप के गरीबों को ज्यादा विविधतापूर्ण खुराक मिलने लगी।
- पहले उनके पास सिर्फ आलू और ब्रेड होते थे अब बहुत सारे लोगों के भोजन में मांसाहार भी शामिल हो गया।
- जीवन स्थिति सुधरी तो देश में शांति स्थापित होने लगी और दूसरे देशों में साम्राज्यवादी मंसूबों के विचार बनने लगे।

द स्मिथफील्ड क्लब पशु बाजार 1851, इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज।



- मेलों में किसान अपने पालतू जानवर लाते थे। जिनकी वहाँ खरीद-फरोख्त की जाती थी।
- स्मिथफील्ड में लंदन का सबसे पुराना पशु बाजार था।
- 19वीं सदी के मध्य में स्मिथफील्ड के पास एक विशाल मुर्गी एवं माँस बाजार खोला गया था, जहाँ से देश के सभी बड़े माँस आपूर्ति केन्द्रों को रेल्वे लाइनें जाती थीं।



- माँस को अलेक्सांद्रा जलपोत पर लादा जा रहा हैं। इलेस्ट्रेटेड लंदन न्यूज - 1878
- माँस का निर्यात तभी संभव हो पाया जब जहाजों का ठंडा रखने की व्यवस्था कर ली गई थी।

Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here